द्यावा चरणाचा ठावा।।३।।

पद ४२

(राग: पिलु - ताल: त्रिताल)

शेषाचलवासी देवा धांव त्वरेनें।।ध्रु.।। काय करूं मज कांही

सुचेना। वृत्ति नसे एक्या ठायीं।।१।। षड्वैरी मज अतिशय गांजिती।

जाच फार झाला जीवा।।२।। माणिक म्हणे प्रभु सोडवी येथुनि।